वह उस खेत में पहुँचे जिसे याकूब ने अपने पुत्र योसेफ को
दिया था

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

(यूहन्ना 4:3–8, उत्पत्ति 48:21–22 — NIV)

अपने पृथ्वी पर रहने के समय, यीशु एक लंबी और शारीरिक रूप से थकाने वाली यात्रा पर निकले—यहूदा से गलील की ओर। भले ही रास्ते में कई नगर और गाँव थे, परन्तु पवित्रशास्त्र बताता है कि उन्होंने उनमें से किसी में भी विश्राम नहीं किया, जब तक कि वे सामरिया नहीं पहुँचे।

सामरिया यहूदियों के लिए विश्राम का सामान्य स्थान नहीं था। वास्तव में, लंबे समय से चली आ रही सांस्कृतिक और धार्मिक दूरियों के कारण, यहूदी सामरियों से किसी भी प्रकार के संपर्क से बचते थे (यूहन्ना 4:9)। फिर भी, इस स्थान ने यीशु को रुकने के लिए प्रेरित किया। वे सिखार नामक एक सामरी नगर में एक कुएँ के पास बैठे—यह संयोग नहीं था, बल्कि इस स्थान का गहरा ऐतिहासिक और आत्मिक महत्व था।

यूहन्ना लिखते हैं:

“सो वह यहूदिया से निकलकर फिर गलील को चले गए। अब उसे
सामरिया से होकर जाना आवश्यक था। सो वह सामरिया के एक नगर सिखार में आए, जो उस भूमि के पास था जो याकूब ने अपने पुत्र योसेफ को दी थी। वहाँ याकूब का कुआँ था, और यीशु यात्रा से

वह उस खेत में पहुँचे जिसे याकूब ने अपने पुत्र योसेफ को
दिया था

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

थककर उस कुएँ के पास बैठ गए। वह दोपहर का समय था।”
(यूहन्ना 4:3–6, NIV)

यह “भूमि का टुकड़ा” कोई सामान्य खेत नहीं था। यह वही खेत था जिसे याकूब ने अपने प्रिय पुत्र योसेफ को दिया था, जो उसके बढ़े हुए वृद्धावस्था में जन्मा था (उत्पत्ति 48:22)। यहूदी परंपरा में, योसेफ सत्यनिष्ठा, धर्मी जीवन, और विपत्तियों में भी विश्वासयोग्यता का प्रतीक था (उत्पत्ति 39:2–9)। याकूब ने उसे दो गुना आशीष दी, जैसा कि लिखा है:

“इसलिए इस्राएल ने योसेफ से कहा, ‘देख, मैं मरने को हूँ;
परन्तु परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा और तुम्हें तुम्हारे पितरों के देश में लौटा ले जाएगा। और मैं तुझे तेरे भाइयों
से एक भाग अधिक देता हूँ, वह भाग जिसे मैंने एमोरियों से
अपनी तलवार और धनुष से लिया था।’”
(उत्पत्ति 48:21–22, NIV)

यह आशीष केवल भौतिक नहीं थी, यह भविष्यद्वाणीपूर्ण भी थी। वह भूमि एक आत्मिक विरासत बन गई। यीशु—जो सब पितृसत्ताओं की आशीषों की पूर्ति हैं (मत्ती 5:17)—शायद उस भूमि में निहित वाचा और अभिषेक को आत्मिक रूप से पहचानते थे।

वह उस खेत में पहुँचे जिसे याकूब ने अपने पुत्र योसेफ को
दिया था

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

उनका वहाँ ठहरना केवल थकान का परिणाम नहीं था—वह उद्देश्यपूर्ण था। उसी स्थान पर, याकूब के कुएँ पर, यीशु ने सुसमाचार की सबसे महत्वपूर्ण वार्तालापों में से एक आरंभ की: सामरी स्त्री से बातचीत (यूहन्ना 4:7–26)। वहाँ उन्होंने प्रकट किया:

कि वे जीवित जल का स्रोत हैं (यूहन्ना 4:10),
कि उपासना अब यरूशलेम या किसी पहाड़ तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि “आत्मा और सच्चाई” में होगी (यूहन्ना 4:23–24),
और कि वे प्रतिज्ञात मसीह हैं (यूहन्ना 4:26)।

इस मुलाकात के परिणामस्वरूप कई सामरी—जो यहूदी दृष्टि में बाहरी माने जाते थे—उद्धार पाए, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि परमेश्वर की कृपा सीमाओं से परे पहुँचती है (यूहन्ना 4:39–42)।

धार्मिक मनन:

यीशु विशेष रूप से योसेफ के खेत में ही क्यों रुके? धर्मशास्त्रीय दृष्टि से, यह दर्शाता है कि धर्मरूपी जीवन एक विरासत बनाता है। योसेफ का सत्यनिष्ठ जीवन (उत्पत्ति 50:20) एक ऐसी आत्मिक बीज-वाही विरासत था जिसका फल पीढ़ियों बाद भी प्रकट

वह उस खेत में पहुँचे जिसे याकूब ने अपने पुत्र योसेफ को
दिया था

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

हो रहा था। यीशु का उस स्थान पर जाना यह दिखाता है कि परमेश्वर अपने धर्मी जनों का सम्मान उनकी मृत्यु के बाद भी करता है। जैसा कि नीतिवचन 10:7 (NIV) कहता है: “धर्मी का स्मरण आशीष रूप में किया जाता है।”

इसी प्रकार, यदि हम आज परमेश्वर के भय और आज्ञाकारिता में जीवन बिताएँ, तो हमारे जीवन भी आने वाली पीढ़ियों के लिए आत्मिक आशीष बन सकते हैं। यदि परमेश्वर ने आपकी भूमि, आपके कार्य, या आपकी विरासत को आपकी धार्मिकता के कारण आशीषित किया है, तो आपकी “भूमि”—आपका परिवार, कार्य, या प्रभाव—एक ऐसा स्थान बन सकती है जहाँ स्वयं मसीह अपने कार्य को पूरा करें।

जिस प्रकार एलीशा की हड्डियों ने मरे हुए व्यक्ति को जीवन दिया (2 राजा 13:21), उसी प्रकार परमेश्वर के दासों की धर्मपरायणता मृत्यु के पश्चात् भी आत्मिक प्रभाव रखती है।

अंतिम विचार:

आप कैसी विरासत छोड़ रहे हैं? क्या आपके आज के कार्य ऐसे आत्मिक बीज बो रहे हैं जो भविष्य में परमेश्वर की उपस्थिति को आकर्षित करेंगे? यदि आप योसेफ की तरह आज्ञाकारिता और भय में चलते हैं, तो आपकी “भूमि”—आपका परिवार, कार्य, या प्रभाव—एक दिन वह स्थान बन सकता है जहाँ मसीह दूसरों के उद्धार के लिए आते हैं।

वह उस खेत में पहुँचे जिसे याकूब ने अपने पुत्र योसेफ को
दिया था

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

प्रभु हमारी सहायता करें कि हम ऐसा जीवन जिएँ जिसकी विरासत उसकी उपस्थिति को आकर्षित करे—आज भी और आने वाली पीढ़ियों तक।

शालोम �

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp